17 अक्टूबर 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 14 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में -

22वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर प्रारम्भ

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 13 से 20 अक्टूबर तक जिनागम के 22 विषयों का व्यवस्थित अध्ययन कराने वाले 22वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ।

दिनांक 13 अक्टूबर को शिविर के उद्घाटन समारोह के अवसर पर आयोजित सभा में मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिनेशजी तातेड़ जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री आदीशजी दिल्ली, श्री प्रकाशभाई गंभीरमलजी अहमदाबाद, सी.ए. शांतिलालजी गंगवाल जयपुर, श्री ताराचंदजी सौगानी जयपुर, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ज्ञानचंदजी जैन (प्राइवेट सेक्रेटरी-राज्यपाल राजस्थान), डॉ. पीयूषजी त्रिवेदी आदि महानुभाव उपस्थित थे। साथ ही तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित जयकुमारजी कोटा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित चर्चितजी शास्त्री कोटा आदि विद्वान उपस्थित थे।

शिविर का उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री रमेशभाई शाह अहमदाबाद (अध्यक्ष-वस्त्रापुर मंदिर), ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री सेवन्तीभाई गांधी अहमदाबाद, मंच उद्घाटन श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा द्वारा संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री ऋषभभाई शास्त्री अहमदाबाद एवं गुरुदेवश्री के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री सुरेशभाई ए.शाह अहमदाबाद थे। आगन्तुक विद्वानों व महानुभावों का श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर द्वारा तिलक लगाकर माल्यार्पणकर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री दिनेशजी तातेड़, श्री सुरेशभाई ए.शाह अहमदाबाद आदि महानुभावों ने अपने मनोभाव व्यक्त किये। सभा का संचालन ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुनीता-प्रेमचंद बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज, कोटा और श्राविकारत्न स्व. श्रीमती कंचनदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री धर्मचंदजी दीवान सुपुत्र श्री विद्याप्रकाश-संजयकुमार-अजय छाबड़ा एवं समस्त दीवान परिवार सूरत (सीकर वाले) हैं।

(विस्तृत समाचार अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे)

प्रशिक्षण शिविर की घोषणा

सम्मेदशिखरजी में संपन्न निजात्म केलि शिविर के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा ग्रीष्मकाल के दौरान आयोजित होने वाले शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अहमदाबाद में आयोजन की घोषणा श्री रमेशभाई शाह और श्री अजितभाई मेहता ने बहुत हर्षोल्लास के साथ की। श्री सेवन्तीभाई गांधी ने बताया कि यह शिविर दिनांक 17 मई से 3 जून 2020 तक आयोजित किया जायेगा। इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी तथा डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा शिविर के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

शाश्वत तीर्थराज सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी में -

निजात्मकेलि शिखर शिविर महोत्सव संपन्न

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) : यहाँ कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन द्वारा आयोजित, तीर्थधाम मंगलायतन एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के सहयोग से जैन युवा फैडरेशन उज्जैन द्वारा शाश्वत तीर्थराज सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी में दिनांक 3 से 9 अक्टूबर, 2019 तक निजात्मकेलि शिखर शिविर महोत्सव अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

शिविर के अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी के योगसार पर सी.डी. प्रवचनों का लाभ मिला। शिविर में दोनों समय ब्र. सुमतप्रकाशजी

(शेष पृष्ठ 6 पर...)

सर्वोदय अहिंसा अभियान
पटाखों
लाभ 0%
हानि 100%
सोचिये!
और समझिये!!
निर्णय कीजिये!!!
यदि आप नेत्रदान और रक्तदान के समर्थक हैं तो पटाखे न चलायें, क्योंकि पटाखों से आँखों की रोशनी चली जाती है।
यदि आप प्रकृति प्रेमी और पर्यावरण प्रेमी हैं तो पटाखे न चलायें, क्योंकि पटाखों से प्रकृति और पर्यावरण को नुकसान होता है।
अरबों रुपयों की व्यर्थ में बर्बादी
पटाखों के रूप में हम एक दिन में अरबों रुपयों में आग लगा देते हैं, जिससे नुकसान ही नुकसान है, फायदा कुछ नहीं। जितने रुपयों के पटाखे हम एक दिन में फूँक देते हैं, उतने रुपयों से हजारों परिवारों का पेट पाला जा सकता है।
आग लगने से संपत्ति का नुकसान
पटाखों से कई स्थानों पर भीषण आग लग जाती है, जिससे करोंड़ों-अरबों रुपयों की सम्पत्ति उसमें जलकर नष्ट हो जाती है और अनेक परिवारों का जीवन अंधकारमय हो जाता है। ये हादसे न सिर्फ दीपावली पर होते हैं, अपितु जब भी पटाखों का प्रयोग होता है, तब ऐसे हादसे पूरे साल भर होते रहते हैं।
अरबों-अनन्तों जीव-जन्तुओं-प्राणियों की हत्या
हमें आग की आँच/तपन से डर लगता है तो पटाखों की भयंकर आग से छोटे-छोटे प्राणियों का जल मरना तो निश्चित है। विज्ञान कहता है कि पटाखों की आवाज से अनेक पशुओं के गर्भ गिर जाते हैं, उसकी विषैली वायु उन्हें अंधा-बहरा बना देती है। महापर्व पर महापाप का यह तांडव कितना उचित है?
वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी का प्रदूषण
पटाखों की तेज आवाज से ध्वनि प्रदूषण, पटाखों के धुँए एवं उसकी गैसों से वायु प्रदूषण, पटाखा जलने के बाद उसकी अवशिष्ट सामग्री से जल एवं मिट्टी का प्रदूषण होता है, जो कि हम सभी के जीवन के लिए प्राणघातक है। पूरे वर्ष पर्यावरण की सँभाल करना तथा एक दिन उसे यूँ बर्बाद करना क्या समझदार लोगों का काम है?

सम्पादकीय –

भगवान महावीर के विश्वव्यापी संदेश

2

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

एक बार महर्षि व्यास के पास उनके कुछ भक्त संक्षेप में धर्म का मर्म जानने के लिए पहुँचे और उनसे निवेदन करने लगे –''महाराज! आपने जो अठारह पुराण बनाये हैं। एक तो वह संस्कृत भाषा में हैं और दूसरे मोटे-मोटे पोथन्ने हैं! इन्हें पढ़ने का न तो हमारे पास समय ही है और न हम संस्कृत भाषा ही जानते हैं। हम तो अच्छी तरह से हिन्दी भी नहीं जानते; अतः हमें तो आप हमारे हित की बात संक्षेप में बता दीजिए।

उनकी बात सुनकर महाकवि व्यास बोले –

''भाई! ये अठारह पुराण हमने तुम जैसों के लिए नही बनाये हैं, तुम्हारे लिए तो मात्र इतना ही जानना पर्याप्त है –

''अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयं।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

अठारह पुराणों में सार रूप में मात्र यही दो बातें कहीं हैं कि यदि परोपकार करोगे तो पुण्य होगा और पर को पीड़ा पहुँचाओगे तो पाप होगा।

मात्र इतना जान लो, इतना मान लो और सच्चे हृदय से जीवन में अपना लो – तुम्हारा जीवन सार्थक हो जायेगा।''

मानों इसीप्रकार भगवान महावीर के भक्त भी उनके पास पहुँचे और कहने लगे कि भगवन! महर्षि व्यास ने तो अपने शिष्यों को अठारह पुराणों का सार दो पंक्तियों में बता दिया; आप भी हमें जैनदर्शन का सार दो पंक्तियों में बता दीजिए; हमें भी ये प्राकृत-संस्कृत में लिखे मोटे-मोटे ग्रन्थराज समयसार, गोम्मटसार आदि पढ़ने की फुर्सत कहाँ हैं? दिनभर धंधे में चला जाता है और रात में टैक्सों के चक्कर में नं. एक और नं. दो का हिसाब-किताब जमाना पड़ता है।

तब उत्तर में भगवान महावीर यह कहते –

''अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः।।

आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति ही हिंसा है और आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति नहीं होना ही अहिंसा है – यही जिनागम का सार है।'' इस अहिंसा के दो रूप हैं – द्रव्यहिंसा और भावहिंसा।

आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति भावहिंसा है और प्रमाद के योग से दूसरों के प्राणों का घात करना, उन्हें नानाप्रकार से सताना, दुःख देना द्रव्यहिंसा है।

यह द्रव्यहिंसा तीनप्रकार से होती है – काया से, वचन से, मन से।

काया से की गई हिंसा को तो सरकार रोकती है। यदि कोई किसी को जान से मार दे, तो उसे पुलिस पकड़ लेगी, उस पर मुकदमा चलेगा और फाँसी की सजा हो जायेगी। इस भय से भयभीत होकर सभी द्रव्यहिंसा करने से डरते हैं।

यदि कोई किसी को वाणी (वचन) से मारे अर्थात् जान से मारने की धमकी दे, गालियाँ दे, भला-बुरा कहे तो सरकार तो कुछ नहीं कर सकती, पर समाज उस पर प्रतिबन्ध अवश्य लगाती है। जो व्यक्ति अपनी वाणी का सदुपयोग करता है, समाज उसका सम्मान करता है और जो दुरुपयोग करता है, समाज उसकी उपेक्षा या अपमान करता है, इसप्रकार सम्मान के लोभ से एवं उपेक्षा या अपमान के भय से हम बहुत-कुछ अपनी वाणी पर संयम रखते हैं।

पर यदि कोई किसी को मन में गालियाँ दे, जान से मारने का भाव करे तो उसका क्या बिगाड़ लेगी समाज और क्या कर लेगी सरकार? अतः न जहाँ सरकार की चलती है और न जहाँ समाज की चलती है, धर्म का काम वहाँ से आरम्भ होता है; अतः भगवान महावीर ने ठीक ही कहा है **– आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति ही हिंसा है और आत्मा में रागादि की उत्पत्ति नहीं होना ही अहिंसा है – यही जिनागम का सार है।** (क्रमशः)

डॉ. दीपकजी वैद्य द्वारा विशेष कक्षा

मंगलायतन-अलीगढ : यहाँ दिनांक 6 से 12 अक्टूबर तक टोडरमल स्मारक के वरिष्ठ अध्यापक डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा गोम्मटसार के आधार से जैन अलौकिक गणित एवं जीव समास प्रकरणों पर विशेष कक्षा ली गई। साथ ही विदुषी श्रुति जैन द्वारा छहढाला की कक्षा ली गई। सभी छात्रों ने कक्षाओं का उत्साहपूर्वक लाभ लिया। **– सचिन्द्र जैन, मंगलायतन**

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट द्वारा
विश्व की अद्वितीय निर्माणाधीन रचना तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर में आयोजित

आमंत्रण पत्रिका

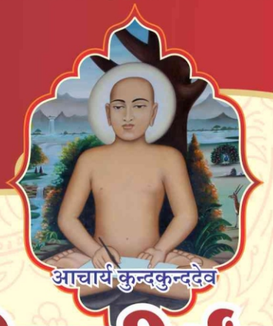
आचार्य कुन्दकुन्ददेव

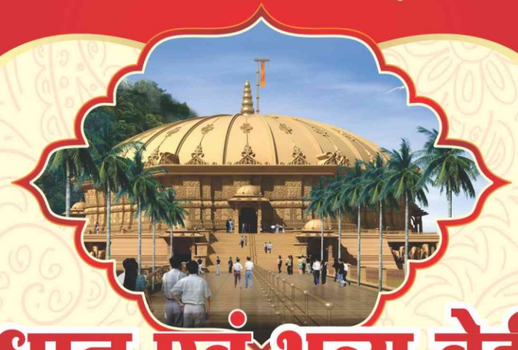

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

श्री चौबीस तीर्थंकर विधान एवं भव्य वेदी शिलान्यास महोत्सव

ढाईद्वीप रचना के मॉडल का अनावरण

शुक्रवार, दिनांक 1 नवम्बर से रविवार, 3 नवम्बर, 2019 तक

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मध्यप्रदेश की प्रसिद्ध औद्योगिक एवं धर्मनगरी इन्दौर की पावन धरा पर श्री चौबीस तीर्थंकर विधान एवं भव्य वेदी शिलान्यास महोत्सव का आयोजन शुक्रवार, दिनांक 1 नवम्बर से रविवार, 3 नवम्बर, 2019 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित संपन्न होने जा रहा है।

इस महामहोत्सव में आध्यात्मिक ज्ञानगंगा प्रवाहित करने हेतु आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के परम शिष्य जैनदर्शन के विश्वप्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, डॉ. सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित रतनलालजी शास्त्री, पण्डित रमेशचंदजी बांझल, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री ओम विहार, पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित अशोकजी शास्त्री ढाईद्वीप आदि अनेक विशिष्ट विद्वानों का प्रवचन, गोष्ठी आदि के द्वारा लाभ प्राप्त होगा। विधि–विधान के समस्त कार्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना के निर्देशन में संपन्न होंगे।

इस अवसर पर मुम्बई से सर्वश्री कान्तिभाई मोटानी, विपुलभाई मोटानी, नितिन सी.शाह, शान्तिभाई शाह; बड़ौदा से अजितजी जैन, सूरत से संजयजी दीवान, प्रकाशचंदजी छाबड़ा, वीरेशजी जैन, वीशूजी जैन, भरतभाई मेहता, अमित नेमीचंदजी बड़जात्या; दिल्ली से आदीशजी जैन, विपुलजी जैन भारतनगर, श्रवणकुमारजी जैन सफदरजंग एन्क्लेव, मनीषजी जैन सूरजमल विहार; स्वप्निलजी जैन मंगलायतन, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, सी.ए. शान्तिलालजी गंगवाल जयपुर, डॉ. अरविन्दजी दोशी गोंडल, प्रमोदजी मोदी सागर, सौरभजी जैन मेरठ, ब्र. रमाबेन देवलाली तथा जैन पत्र संपादक संघ से डॉ. निर्मलकुमार जैन (रिटा. जज) दिल्ली, मिलापचंद इण्डिया (वरिष्ठ पत्रकार) जयपुर, शैलेन्द्र जैन (एडवोकेट) अलीगढ, डॉ. संजीव भानावत (मीडिया विशेषज्ञ) जयपुर, राहुल जैन (आज तक) दिल्ली, श्रीमती पारुल जैन (स्वतंत्र पत्रकार) दिल्ली, एन.के. खींचा (रिटा.आर.ए.एस.) जयपुर, अखिल बंसल (संपादक–समन्वय वाणी) जयपुर के अतिरिक्त सतीशजी पामेचा, महेन्द्रकुमारजी जैन (एम.के. जैन), संजयजी शुक्ला (विधायक क्षेत्र नं.1), प्रदीपजी कासलीवाल, नरेन्द्रजी वैद्य, मनोजजी पाटनी, सतीशजी कासलीवाल ओमविहार, राकेशजी शाह, पंकजजी काला, दिनेशजी उज्जैन आदि स्थानीय महानुभाव भी पधार रहे हैं।

वेदी शिलान्यास शनिवार, दिनांक 2 नवम्बर, 2019

अध्यक्ष : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल
मुख्य अतिथि : श्रीमती शोभा रसिकलाल धारीवाल पूना
सुश्री जाह्नवी धारीवाल पूना
विशिष्ट अतिथि : श्री महेन्द्रकुमार राहुल–विनीतजी गंगवाल परिवार जयपुर
श्री चंपालाल भवूतमलजी भण्डारी बैंगलोर
श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ
श्री अशोकभाई वाधर जामनगर
श्री अजीत प्रसाद जी जैन दिल्ली

31 इंच की स्फटिक मणिमय सीमन्धर भगवान की प्रतिमा, 33 इंच की स्वर्णमयी आदिनाथ भगवान की प्रतिमा एवं 33 इंच की रजतमयी महावीर भगवान की प्रतिमा की वेदी के शिलान्यासकर्ता –

- श्रीमती शारदाबेन शांतिलालभाई शाह परिवार हस्ते नेमेशभाई केतनभाई शाह, मुम्बई
- श्री अनंतभाई शेठ परिवार (अनंत मामा), मुम्बई
- ढाईद्वीप जिनायतन स्वप्नदृष्टा स्व. श्री मुकेशजी हस्ते सोनलजी–सृष्टि जैन, इन्दौर
- जयाबेन जयन्तीलालजी दोशी परिवार हस्ते अक्षयभाई जयेशभाई दोशी, मुम्बई
- श्री छगनलाल कालिदासभाई वाधर परिवार जामनगर हस्ते त्रंबकभाई खेमचंदभाई वाधर, जामनगर
- राजेशभाई जवेरी परिवार, अहमदाबाद
- मधुभाई शाह परिवार, मुम्बई

श्री चौबीस तीर्थंकर विधान के आमंत्रणकर्ता – श्री विजयजी जैन, दादर

श्री द्रव्यसंग्रह विधान के आमंत्रणकर्ता – श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या

ध्वजारोहणकर्ता – श्री सुरेश बालचंदजी पाटनी, कोलकाता

भवदीय :

अजितप्रसाद जैन, दिल्ली (अध्यक्ष)	डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, जयपुर (कार्याध्यक्ष)	श्रीमती सोनल मुकेश जैन, इन्दौर (महामंत्री)	शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर (मंत्री)	महेन्द्र चौधरी, भोपाल (कोषाध्यक्ष)

ट्रस्टीगण : विपिनभाई वाधर जामनगर, प्रदीप चौधरी किशनगढ, प्रेमचंद बजाज कोटा, श्रीमती शोभा रसिकलाल धारीवाल पूना, सुश्री जाह्नवी धारीवाल पूना, सुश्री सृष्टि जैन इन्दौर, आनन्द पाटनी इन्दौर, कमल बड़जात्या मुम्बई, कैलाशचंद छाबड़ा मुम्बई

विशेष कार्यक्रम

शुक्रवार, दिनांक 1–11–2019
ध्वजारोहण, मण्डप एवं मंच उद्घाटन, चित्र अनावरण, उद्घाटन सभा
एवं श्री चौबीस तीर्थंकर विधान

शनिवार, दिनांक 2–11–2019
वेदी शिलान्यास (समारोह–प्रात: 8.30 बजे से)
संगोष्ठी –'आचार्यकल्प पं. टोडरमलजी' (संयोजक–डॉ. शांतिकुमार पाटील) दोपहर 2.30 बजे से
नाटक – 'टोडरमल से टोडरमल तक' (संयोजक–सर्वज्ञ भारिल्ल) रात्रि 8.30 बजे से

रविवार, दिनांक 3–11–2019
श्री द्रव्यसंग्रह विधान एवं समापन

आपको सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

डॉ. संजीवजी गोधा
ढाईद्वीप रचना निर्देशक

पण्डित विपिन जैन मुम्बई
संयोजक– वेदी शिलान्यास महोत्सव

कार्यक्रम स्थल एवं सम्पर्क सूत्र :– तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, पटेल नगर, गोम्मटगिरि सर्किल, नैनोद, इन्दौर (म.प्र.) 9584372443 (अशोक शास्त्री), 9754552550 (प्रेम), 9893304432 (आवास विभाग) www.dhaidweep.com

आखिर हम करें क्या ?

7

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

कभी-कभी हमारे ज्ञान का ज्ञेय सींगों वाला गधा भी बन जाता है, जबकि जगत में ऐसा कोई गधा होता ही नहीं है कि जिसके सींग हों।

वास्तविक लोक से ज्ञान का लोक बहुत बड़ा है। कल्पना लोक की वस्तुयें भी ज्ञान में ज्ञेय बनती हैं।

उक्त संदर्भ में परमभावप्रकाशक नयचक्र के ज्ञाननय संबंधी प्रकरण का अच्छी तरह अध्ययन करना चाहिये।[१]

उक्त संदर्भ में प्रमेयरत्नमाला में समागत यह छन्द दृष्टव्य है–

पिहिते कारागारे तमसि च सूचिमुखाग्रदुर्भेद्ये।
मयि च निमीलित नयने तथापि कान्ताननं व्यक्तं।।

एक व्यक्ति कहता है कि मुझे जेल की काल कोठरी में बन्द कर दिया गया। जिसमें इतना घना अंधकार है कि सुई के मुख के अग्रभाग से भी नहीं भेदा जा सकता और मैंने आँखें पूरी तरह बन्द कर ली हैं, फिर भी मुझे अपनी पत्नी का मुख साफ दिखाई दे रहा है।

तात्पर्य यह है कि जो चीज सामने नहीं है, वह भी दिखाई देती है, ज्ञान का ज्ञेय बन जाती है। अतः यह सहज ही सिद्ध है कि ज्ञानपर्याय का जब जो ज्ञेय बनना है, तब वही ज्ञेय बनेगा, अन्य कोई नहीं।

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि एक ओर तो आप योग्यता को नियामक मानते हैं। परीक्षामुख सूत्र का उदाहरण देते हैं। कहते हैं योग्यता ही यह सुनिश्चित करती है कि अमुक ज्ञान पर्याय अमुक ज्ञेय को ही जानेगी। यह सब आदि से ही सुनिश्चित है।

साथ में यह भी कहते हैं कि वह योग्यता क्षयोपशम लक्षण वाली होना चाहिये। क्षयोपशम एक सुनिश्चित समय पहले ही होता है। वह अनादि-अनन्त तो होता नहीं।

ऐसी स्थिति में प्रश्न खड़ा होता है कि हमारी ज्ञानपर्याय का ज्ञेय अनादिकाल से सुनिश्चित है कि बाद में क्षयोपशम के अनुसार सुनिश्चित होता है? (क्रमशः)

१. परमभावप्रकाशक नयचक्र पृष्ठ २७१ से २८६ तक।

अमेरिका में धर्मप्रभावना

वर्जीनिया (अमेरिका) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रातःकाल पूजन एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन हुआ। वहाँ के पुराने श्रोताओं में श्री महेन्द्रजी शाह, श्री शशिकांतजी शाह, श्री इन्द्रवदनजी शाह आदि ने कहा कि हम बीस साल से विद्वान बुला रहे हैं; परन्तु ऐसा विद्वान आज तक नहीं आया। ज्ञातव्य है कि वहाँ तेरापंथी दिगम्बर जैन मंदिर निर्माणाधीन है।– **दुर्लभ जैन व गौरव जैन, यू.एस.ए.**

शोक समाचार

अहमदबाद (गुज.) निवासी श्री प्रभुलालजी जैन का शांत-परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप वस्त्रापुर मंदिर सभा के नियमित स्वाध्यायी थे, सोनगढ में जाकर गुरुदेवश्री के सान्निध्य में तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में श्री सुरेशचंदजी जैन, पवनजी जैन एवं जम्बूकुमार जैन की ओर से संस्था हेतु 2100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

के प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित विमलदादा झांझरी, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन दोपहर में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के संयोजन में विविध विषयों पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 25 विद्वानों के शोधपरक वक्तव्य का लाभ मिला। ब्र. सुमतप्रकाशजी के निर्देशन में ब्रह्मचारी विद्वान/विदुषियों द्वारा गोष्ठी तथा ब्र. समताबहन व श्रीमती अमिधारा झांझरी के निर्देशन एवं संचालन में विद्वत् महिला संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

बाल कक्षायें ब्र. समताबहन, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर आदि द्वारा ली गई। प्रौढ कक्षा में पण्डित संजयजी कोटा, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर आदि का लाभ मिला। साथ ही ब्र.हेमचंदजी हेम, पण्डित सुबोधजी सिवनी, पण्डित विपिनजी नागपुर, डॉ. मनीषजी मेरठ आदि के प्रवचन हुए।

प्रतिदिन प्रातः श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन व पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के विधानाचार्यत्व में संपन्न हुआ।

रात्रिकालीन विशिष्ट कार्यक्रमों में जैन युवा फैडरेशन उज्जैन एवं शाश्वतधाम उदयपुर की बालिकाओं की विशिष्ट भूमिका रही।

संपूर्ण शिविर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, श्री प्रदीपजी झांझरी एवं श्री नगेशजी पिड़ावा के कुशल मार्गदर्शन में श्री जम्बूकुमारजी धवल, श्री सिद्धप्रकाश झांझरी, श्री सहज झांझरी के श्रम से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रमों का मंच संचालन पण्डित अरिहंतप्रकाशजी झांझरी व श्री ज्ञाताजी झांझरी ने किया। शिविर में देश-विदेश से पधारे लगभग 4000 साधर्मियों ने लाभ लिया।

आँखों एवं कानों पर बुरा प्रभाव

पटाखों की तेज रोशनी से तथा बारूद आँखों में जाने से आँखें खराब हो जाती हैं। इसकी तेज आवाज से कानों के पर्देतक फट जाते हैं। श्वास के रोगियों के लिए यह महापर्व आराधना का नहीं अपितु महा यातना का पर्व बन जाता है, उन्हें अनचाही कैद का सामना करना पड़ता है। इस कुकृत्य के जिम्मेदार क्या पटाखा फोड़ने वाले नहीं हैं?

ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा

पटाखों के जलने से निकलने वाली कार्बन डाई ऑक्साइड एवं हानिकारक गैसों से वायुमंडल दूषित होता है, जिससे ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा निरंतर बढ़ रहा है।

ईश्वर की वाणी का अपमान

किसी भी धर्म में हिंसा करने, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने का उपदेश नहीं दिया गया है। हम पटाखे फोड़कर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं तथा अनेक जीव-जन्तुओं को जिन्दा जलाकर ईश्वर की वाणी का अपमान/अनादर कर रहे हैं।

शारीरिक क्षति एवं जनहानि

बम विस्फोट करने वालों को हम आतंकवादी कहते हैं तो विश्व में प्रतिवर्ष पटाखों की आग से लाखों लोग अंधे/बहरे/घायल हो जाते हैं तथा हजारों की मृत्यु हो जाती है। आपके पटाखा प्रेम के दुष्परिणाम देखने के लिए दीपावली के अगले दिन अपने नगर के अस्पताल में जरूर जायें और फिर स्वयं विचार करें कि हम कौन हैं?

पटाखा फैक्ट्री में आग, 54 मरे

फैक्ट्री का मलबा अभी भी सुलग रहा है। भारी गर्मी से कुछ बिना फटे पटाखों में विस्फोट होने की आशंका जताई है। पुलिस ने पांच एकड़ में फैले फैक्ट्री के आसपास के क्षेत्र को घेर लिया है। दमकलकर्मी आग बुझाने में लगे हैं। इसके बाद मलबे को हटाने का काम शुरू किया जा सकेगा।

शिवकाशी में भीषण दुर्घटना, 70 से ज्यादा घायल

तमिलनाडु में शिवकाशी जिले के मुदलीपट्टी गांव के पास पटाखा कारखाने में एकाएक हुआ धमाका
घटना के वक्त 300 लोग थे परिसर के अंदर, परिसर के सभी 48 शेड जलकर खाक हो गए।
पटाखों का सबसे ज्यादा कारोबार यहीं। 80 फीसदी पटाखों का उत्पादन। 1000 करोड़ रुपये करीब का वार्षिक पटाखा कारोबार

निवेदक
अजितप्रसाद जैन

अध्यक्ष :
श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट
राजपुर रोड, दिल्ली

त्योहार की खुशियाँ देने में हैं, लेने में नहीं!

निवेदन : इस पावन पर्व पर एक पेड़ अवश्य लगायें!

संयोजक : संजय शास्त्री, जयपुर
आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन
प्रायोजक : श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
प्रमुख सहयोगी : श्री प्रेमचन्द जी बजाज, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा

निवेदन - इस पत्रिका को विद्यालय, मंदिर, अस्पताल आदि सार्वजनिक स्थल पर लगवायें, जहाँ अधिक से अधिक लोग इस पढ़ सकें। अभियान का हिस्सा बनने हेतु सम्पर्क करें। 9785 999100

विश्वस्तरीय सत्पथ प्रश्नमंच की घोषणा

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दि महोत्सव के अवसर पर सत्पथ फाउण्डेशन ने स्वाध्याय की परम्परा को विकसित करने हेतु सम्मेदशिखरजी में शिक्षण शिविर के अवसर पर 'विश्वस्तरीय सत्पथ प्रश्नमंच' की घोषणा की। इसके अग्रिम पत्र का विमोचन ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सान्निध्य में अनेक विद्वानों व श्रेष्ठीगणों द्वारा हजारों साधर्मियों की उपस्थिति में हुआ।

पण्डित टोडरमलजी के जीवन पर आधारित प्रश्नमंच की विस्तृत जानकारी डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने देते हुए कहा कि इसमें 1008 विकल्पात्मक प्रश्न होंगे व 1008 प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया जायेगा। इसके माध्यम से ऐतिहासिक महापुरुष मनीषी टोडरमलजी एवं उनके द्वारा लिखे गये साहित्य के बारे में अधिक से अधिक लोगों को शिक्षित किया जायेगा।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर ने किया।

लॉस एन्जिल्स में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

लॉस एन्जिल्स (अमेरिका) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा प्रात:काल अध्यात्म के नय एवं सायंकाल आत्मानुभूति के लिये आवश्यक जैन सिद्धांत विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। शनिवार को युवाओं के लिये विशेषरूप से 'आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग' नामक विशेष सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें जैन सिद्धांतों के प्रेक्टिकल एप्लीकेशन पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त श्री अविनाशजी टडैया द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

ज्ञातव्य है कि दशलक्षण पर्व के पश्चात् न्यूजर्सी (अमेरिका) में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा अपने निजी प्रवास के दौरान साधर्मियों से तत्त्वचर्चा की गई, जिससे सभी साधर्मीजन अत्यंत प्रभावित हुये एवं ऑनलाइन तत्त्वचर्चा करने की भावना व्यक्त की।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

13 से 20 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
25 से 29 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
1 से 3 नवम्बर	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
4 से 11 नवम्बर	कलकत्ता	अष्टाह्निका महापर्व

पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 2 अक्टूबर को रात्रि में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ, जिसमें महाविद्यालय के छात्रों को शिविर-डायरी पुरस्कार, कण्ठपाठ पुरस्कार, दशलक्षण पर्व की प्रतियोगिताओं के पुरस्कार, 'ऐसे क्या पाप किये' विषय पर संपन्न झांकी पुरस्कार एवं विभिन्न पुरस्कार दिये गये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मंचासीन अतिथियों में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री हीराचंदजी बैद, जिनकुमारजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री, नीशूजी शास्त्री, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सहज जैन पिड़ावा (शास्त्री तृतीय वर्ष), संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नयन जैन खनियांधाना व संयम जैन मड़देवरा ने एवं आभार प्रदर्शन गौरवजी शास्त्री ने किया।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 29 सितम्बर को **'प्राकृत अध्ययन की आवश्यकता : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. कमलचंदजी सौगानी जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चेतन जैन गुढाचन्द्रजी (उपाध्याय वरिष्ठ) तथा स्वस्ति सेठी जयपुर (शास्त्री प्रथमवर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण भव्य जैन उदयपुर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के प्रजल जैन खनियांधाना व नमन जैन भरतपुर ने किया। आभार प्रदर्शन डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com